पत्रकारिता के बढ़ते आयाम और हिन्दी भाषा का महत्व

* डॉ. सुशीला सारस्वत

सारांश

हिंदी पत्रकारिकता के विकास की यात्रा को तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है। देश में राष्ट्रीयता की भवना के पनपने और विकसित होने के साथ–साथ इसका भी पल्लवन हुआ। 1826 में उदंत मार्तंड कें साथ इसकी यात्रा आरंभ होती है और तीव्र वेग के साथ इसका विस्तार हुआ। इसके क्षेत्र में भी विस्तार हुआ है। आज इसकी उपयोगिता ओर इसका महत्व इतना बढ़ गया है कि गाँव–गाँव व शहर–शहर में इसकी माँग बढ़ती जा रही है।

कूट शब्द– राष्ट्रीयता, आंदोलन, समसामयिक

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहने के कारण उसे सब तरीके से जागरूक होने की आवश्यकता है। समाज में क्या चल रहा है और क्या नहीं कैसे हो रहा है? क्यों हो रहा है? यह जानने की उसकी जिज्ञासा होती है और जानना भी चाहिए क्योंकि हम परस्पर एक दूसरे के पूरक बनने चाहिए इसीलिए पत्रकारिता ऐसा विषय है जो इन समाचारों को या जानकारी को हमें सहेज कर देता है और इसमें भाषा का विशेष महत्व होता है स्थानीय भाषा में यदि हमें यह जानकारी प्राप्त होती है तो वह हमारे लिए अत्यंत सुगम है।

हिंदी पत्रकारिकता की कहानी भरतीय राष्ट्रीयता की कहानी है। हिंदी पत्रकारिता के आदि उन्नायक जातीय चेतना, युगबोध और अपने महत् दायित्व के प्रति पूर्ण सचेत थे। कदाचित् इसलिए विदेशी सरकार की दमन–निति का उन्हें शिकार होना पड़ा था, उसके नृशंस व्यवहार की यातना झेलनी पड़ी थी। उन्नीसवीं शताब्दी में हिंदी गद्यांश निर्माण की चेष्ठा और हिंदी–प्रचार आन्दोलन अत्यंत प्रतिकूल परिस्थियों में भंयकर कठिनाईयों का सामनस करते हुए भी कितना तेज और पुष्ठ था। इसका साक्ष्य 'भारतमित्र' 'सार सुधानिधि और 'उचित वक्ता' के जीर्ण पृष्ठों पर मुखर है। भरतवर्ष में आधुनिक ढंग की पत्रकारिता का जन्म अठारहवीं शताब्दीं के चतुर्थ चरण में कलकत्ता, बंबई ओर मद्रास में हुआ। 1780 ई0 में प्रकासित हिके का 'कलकत्ता गजट' कदाचित् इस और पहला प्रयत्न था। हिंदी के पहले पत्र उदंत मार्तण्ड (1826) के प्रकासित होने तक इन नगरों की ऐंग्लोइंडियन अंग्रेजी पत्रकारिता काफी विकसित हो गई थी।

यह सपष्ट है कि हिंदी पत्रकारिता बहुत बाद की चीज नहीं है। दिल्ली का 'उर्दू अखबार' (1833) और मराठी का 'दिम्दर्शन' (1837) हिंदी के पहले पत्र 'उदंत मार्तड' (1826) के बाद ही आए। 'उदंत मार्तड' के संपादक पंडित जुगलकिशोर थे। यह साप्ताहिक पत्र था। पत्र की भाषा पछाँही हिंदी रहती थी, जिसे पत्र के संपादको ने 'मध्यवेशीय भाषा' कहा है। यह पत्र 1827 में बंद हो गया। उन दिनो सरकारी सहायता के बिना किसी भी पत्र का चलना असंभव था। कंपनी सरकार ने मिशनरियों के पत्र को डाक आदि की सुविधा दे रखी थी, परंतु नई भाषाशैली

का पर्वतन 1873 में 'हरिश्चंद्र मैगजीन' से ही हुआ। इसके बाद कुछ द्विभाषीय पत्र निकाले गए। 1867 से पहले भाषाशैली के संबंध में हिंदी पत्रकार किसी निश्चित शैली के संबंध में हिंदी पत्रकार किसी निशिचत शैली का अनुसरण नहीं कर सके थे। इस वर्ष 'कवि वचनसुधा' का प्रकाशन हुआ और एक तरह से हम उसे पहला महत्वपुर्ण पत्र कह सकते है। पहले यह मासिक था, फिर पाक्षिक हुआ ओर अंत में साप्ताहिक। भारतेन्दू के बहुविध ब्यक्तित्व का प्रकाशन इस पत्र के माध्यम से हुआ, परंतु सच तो यह है कि 'हरिशंद्र मैग्जीन' के प्रकाशन (1873) तक वे भी भाषाशैली और विचारों के क्षेत्र में मार्ग ही खोजते दिखाई देते है। हिंदी पत्रकारिता का दुसरा युगः भारतेन्दु युग–हिंदी पत्रकारिता का दुसरा युग : भारतेन्दु युग–हिंदी पत्रकारिता का दुसरा युग 1873 से 1900 तक चलता है।

इस युग के एक छोर पर भारतेन्दु का 'हरिशचंद्र मैगजीन' था और नागरीप्रचारिणे सभा द्वारा अनुमोनदन प्राप्त ''सरस्वती''। इन 27 वर्षो में प्रकाशित पत्रों की संख्यँा 300–350 से उपर है और ये नागपुर तक फैले हुए है। अधिकांश पत्र मासिक या साप्ताहिक थे। मासिक पत्रों में निबंध पत्र मासिक या साप्ताहिक थे। मासिक पत्रों में निबंध, नबल कथा (उपन्यास), वार्त्ता आदि के रुप में कुछ अधिक स्थायी संपति रहती थी, परंतु अधिकांश पत्र 10–15 पृष्ठों से अधिक नही जाते थे और उन्हें हम आज के शब्दों में ''विचारपत्र'' ही कह सकते है। साप्ताहिक पत्रों में समाचारों और उनपर टिप्पणियों का भी महत्वपूर्ण स्थान था।

वास्तव में दैनिक समाचार के प्रति उस समय विशेष आग्रह नहीं था और कदाचित् इसलिए उन दिनों साप्ताहिक और मासिक पत्र कहीं अधिक महत्वपूर्ण थे। उन्होंने जनजागरण में उत्यंत महत्वपूर्ण भाग लिया था। भारतेंदु के बाद इस क्षेत्र में जो पत्रकार आए उनमें प्रमुख थेः–बालकृष्ण भट्ट, दुर्गाप्रसाद मिश्र, पंडित गौरीदत्त, प्रतापनारायण मिश्र, देवकीनंदन खत्री तीसरा चरणः–बीसवीं शताब्दी के प्रथम बीस वर्ष – बीसवीं शताब्दी की प्रत्रकारिता हमारे लिए उपेक्षाकृत निकट है और उसमें बहुत कुछ पिछले युग कली प्रत्रकारिता की ही विविधता और बहुरुपता मिलती है।

19 वीं शती के पत्रकारो के भषा–शैली क्षेत्र में अव्यवस्था का सामना करना पड़ा था। उन्हें एक ओर अंग्रेजी और दुसरी ओर उर्दू के पत्रों के सामने अपनी वस्तु रखनी थी। अभी हिंदी में रुचि रखने वाली जनता बहुत छोटी थी। धीरे–धीरे परिस्थिति बदली और हम हिंदी पत्रों 4 को साहित्य और राजनिति के क्षेत्र में नेतृत्व करते पाते है। इस शताब्दी से धर्म और समाजसुधार के आंदोलन कुछ पीछे पड़ गए और जातीय चेतना ने धीरे–धीरे राष्ट्रीय चेतना का रुप ग्रहण कर लिया।

फलतः अधिकांश पत्र साहित्य और राजनिति को ही लेकर चले। ''सरस्वती'' के माध्यम से आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी और ''इंदु'' के माध्यम से पंडित रुपनारायण पांडेय ने जिस संपादकीय सतर्कता, अध्यावसाय और इमानदारी का आदर्श हमारे सामने रखा वह हिंदी प्रत्रकारिता को एक नई दिशा देने समर्थ हुआ। परंतु राचनितिक क्षेत्र में हिंदी पत्रकारिता को नेतृत्व प्राप्त नहीं हो सका। फिर भी हम ''अभ्युदय'' (1905) ''प्रताप'' (1913) ''कर्मयोगी'' ''हिंदी केसरी'' (1904–1908) आदि के रुप में हिंदी राजनितिक प्रत्रकारिता को कई डंग आगे बढ़ते पाते हैं। प्रथम महायुद्ध की उत्तेजना ने एक बार फिर कई दैनिक पत्रों को जन्म दिया। कलकत्ता से ''कलकत्ता समाचार'' ''स्वतंत्र'' और ''विश्वामित्र'' प्रकासित हुए बंबई से ''वेंकटेश्वर समाचार'' ने अपना दैनिक संस्करण प्रकाशित करना आरंभ किया और दिल्ली से ''विजय'' निकला। 1921 मे काशी और ''आज'' और कानपुर से वर्तमान प्रकाशित हुए। इस प्रकार हम देखते है कि आधुनिक युग 1921 के बाद हिंदी पत्रकारिता का समसामायिक युग आरेभ होता है। इस युग में हम राष्ट्रीय और साहित्यिक चेतना को साथ–साथ पल्लवित पाते है। इसी समय के लगभग हिंदी का प्रवेश विश्व–विद्यालयों में हुआ और कुछ ऐसे कृति संपादक सामने आए जो अंग्रेजी की प्रत्रकारिता से पूर्णतः परिचित थे और जो हिंदी पत्रों को अंग्रेजी, मराठी, और बँगला के पत्रों के समकक्ष लाना चाहते थे।

फलतः साहित्यिक प्रत्रकारिता में एक नए युग का आरंभ हुआ। राष्ट्रीय आंदोलनों ने हिंदी की राृष्ट्रभाषा के लिए योग्यता पहली बार घोषित की और जैसे–जैसे राष्ट्रीय आंदोनों का बल बढ़ने लगा, हिंदी के पत्रकार और पत्र अधिक महत्व पाने लगे। 1921 के बाद गाँधी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आंदोलन मध्यवर्ग तक सीमित न रहकर ग्रमीणों और श्रमिको तक पहुँच गया। और उसके इस प्रसार में हिंदी पत्रकारिता ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। वास्तव में आज हमारे मासिंक साहित्य की प्रौढ़ता और विविधता में किसी प्रकार का संदेह नहीं हो सकता। हिंदी की अनेकानेक प्रथम श्रेणी की रचनाएं मासिकों द्वारा ही पहले प्रकाश में आई और अनेक श्रेष्ठ कवि औश्र साहित्यकार पत्रकारितासे भी संबंधित रहें। आज हमारे मासिक पत्र जीवन और साहित्य के सभी अंगो की पूर्ति करते है और अब विशेषज्ञता की ओर भी ध्यान जाने लगा है। आधुनिक साहित्य के अनेक अंगों कही भाँति हिंदी पत्रकारिता भी नई कोटि की है और उसमें भी मुख्यतः हमारे मधवित वर्ग की सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और राजनितिक हलचलों का प्रतिबिंब भसस्वर है। वास्तव में पिछले 200 वर्षो के सच्चा इतिहास हमारी पत्र–पत्रिकाओं से ही संकलित हो सकता है। द्विवीवेदी युग के साहित्य को हम ''सरस्वती'' औश्र ''इंदु'' में जिस प्रयोगात्मक रुप में देखते है, वहीं उस साहित्य का असली रुप है।

1921 ई0 के बाद साहित्य बहुत कुछ पत्रपत्रिकाओं से स्वतंत्र होकर अपने पैरों पर खड़ा होने लगा, परंतु फिर भी विष्टि साहित्यिक आंदोलनों के लिए हमें मासिंक पत्रों के पृष्ठ ही उलटने पड़ते है। राजनितिक चेतना के लिए तो पत्रपत्रिकाएँ है ही। वस्तुतः पत्रपत्रिकाएँ जितनी बड़ी जनसंख्याँ को छूती है विशुद्ध साहित्य का उतनी बड़ी जनसंख्याँ तक पहूँचना असंभव है। 1990 के बाद 90 के दशक में भरतीय भाषाओं के अखबारों, हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में अमर उजाला, दैनिक भस्कर, दैनिक जागरण आदि के नगरों–कस्बों से कई संस्करण निकलने शुरु हुए। जहां पहले महानगरों से अखबार छपते थे, भुमंडलीकरण के बाद आयी नयी तकनीक बेहतर सड़क और यातायात कं संसाधनों केद सुलभता की वजह से छोटे शहरों, कस्बों से भी नगर संस्करण का छपना आसानहो गाया। साथ ही इन दशकों में ग्रामीण इलाकों कस्बों में फैलते बाजार में नयी वस्तुओं के लिए नये उपभोक्ताओं की तलाश भी शुरु हुई। हिंदी के अखबार इन वस्तुओं के प्रचार–प्रसार का एक जरिया बन कर उभरा है। साथ ही साथ अखबारों के इन संस्करणों में स्थनीय खबरों के पाठको की संख्याँ में काफी बढौतरी हुई है। मीडिया विशे ाज्ञ संवंती निनान ने इसे हिंदी की सार्वजनिक दुनिया का पुनर्वि कार कहा है।

वे लिखती है ''प्रिंट मीडिया'' ने स्थनीय घटनाओ के कवरेज द्वारा जिला स्तर पर हिंदी की मौजूद सार्वजनिक विस्तार किया है। औश्र साथ ही अखबारों के सिनीय संस्करणों के द्वारा अनजाने में इसका पुनर्विष्कार किया है।

***व्याख्याता**
हिन्दी विभाग
बी.बी.डी. राजकीय महाविद्यालय,
चिमनपुरा, (शाहपुरा)

संदर्भ ग्रन्थ

1. हिंदी पत्रकारिता –(कष्ण बिहारी मिश्र)
2. भारतीय पत्रकारिता कोष–(विजयदत्त श्रीधर)
3. हिंदी पत्रकारिता के छह दशक –(अरविन्द कुमार)

4. हिंदी भाषा के विकास में पत्र–पत्रिकाओं का योगदान –(प्रो0 ऋषभदेव शर्मा)

5. हिंदी पत्रकारिता के भविष्य की दिशा (डॉ0 कुलदीप चन्द अग्निहोत्री)

6. पत्रकारिताः दुलारी तलवार (महादेव दोसाई)